Journal of Advance Research in Science and Social Science (JARSSC)
Publisher: Indian Mental Health & Research Centre
ISSN: 2582-2004
Volume 03, Issue 02
DOI: 10.46523/jarssc.03.02.24
Multidisciplinary, Open Access
Impact Factor: 3.612

वाल्मीकि रामायण में वर्णित 'गंगा' और 'शोण' नदी

डॉ. धर्मेन्द्र कुमार तिवारी
विषय विशेषज्ञ
प्राचीन भारतीय इतिहास एवं पुरातत्व विभाग
लखनउ विश्वविद्यालय,लखनउ

विश्व की लगभग समस्त प्राचीन सभ्यताएं (मेसोपोटामिया, बेबीललोनिया, असीरिया, हड़प्पा आदि) नदियों के किनारे ही पल्लवित हुईं। भारतीय सभ्यता में नदियों का विशिष्ट स्थान रहा है। भारत में प्रारम्भिक आर्य सभ्यता के विकास में सात नदियों (सिंधु, वितस्ता, असिक्नी, परुष्णी, विपाशा, शतुद्रि और कुभा/गोमल) का प्रमुख स्थान रहा, जिसे ऋग्वेद में सप्तसैंधव कहा गया है। इन नदियों के माध्यम से ही आर्यों ने धार्मिक, आर्थिक और सामाजिक प्रगति की। प्राचीन भारत के सर्वप्रमुख नगर जैसे– काशी, कोशल, प्रयाग आदि क्रमशः गंगा, सरयू, गंगा–यमुना संगम के तटों पर ही बसे और धार्मिक आस्था के प्रमुख केन्द्र बने। महाकाव्य युग में गंगा, यमुना, सरयू और शोण आदि नदियों का सर्वाधिक महत्व था। अयोध्या, हस्तिनापुर और इन्द्रप्रस्थ जैसे नगरों का विकास इन्हीं नदियों के तटों पर हुआ।

प्रस्तुत लेख में महर्षि वाल्मीकि द्वारा विरचित महाकाव्य 'रामायण' (आदिकाव्य) में वर्णित गंगा और शोण नदियों की भौगोलिक स्थिति क्या थी और भगवान राम का इन नदियों से कितना घनिष्ठ सम्बन्ध था यह दृष्टव्य है। साथ ही उल्लेखनीय है कि वाल्मीकि रामायण में गंगा और शोण कौन से अन्य नामों से प्रसिद्ध होते हुए पृथ्वी पर प्रवाहित होती रहीं।

1.गंगा–

गंगा भारत की पवित्रतम् नदी है। वैदिक कालीन नदियों में इसका उल्लेख मिलता है। ऋग्वेद के नदी सूक्त ''10.75'' में उल्लिखित 25 नदियों में गंगा का भी नाम मिलता

Received: 25.10.2020 **Accepted:** 16.11.2020 **Published**: 18.11.2020

This work is licensed and distributed under the terms of the Creative Commons Attribution 4.0 International License (https://creativecommons.org/licenses/by/4.0), which permits unrestricted use, distribution, and reproduction in any Medium, provided the original work is properly cited.

Journal of Advance Research in Science and Social Science (JARSSC)
Publisher: Indian Mental Health & Research Centre
ISSN: 2582-2004
Volume 03, Issue 02
DOI: 10.46523/jarssc.03.02.24
Multidisciplinary, Open Access
Impact Factor: 3.612

है।[1] रामायण के अनुसार इक्ष्वाकु वंशी भगीरथ की तपस्या से प्रभवित होकर गंगा पृथ्वी पर अवतरित हुईं।[2] आगे वर्णित है कि बिन्दुसरोवर से निकलकर गंगा की सात धाराएं हुईं, जिनमें तीन पूर्व दिशा की ओर, तीन पश्चिम दिशा की ओर और एक धारा भगीरथ के पीछे–पीछे उत्तर भारत के मैदानी क्षेत्रों में आई।[3] उल्लेख है कि भगीरथ की तपस्या से अवतरित गंगा जी द्वारा ही राजा सगर के साठ हजार पुत्रों का उद्धार हुआ।[4] ब्रम्हा जी के आशीर्वाद से गंगा को भगीरथ की ज्येष्ठ पुत्री माना गया और गंगा का एक नाम 'भागीरथी' भी पडा।[5] ये आकाश, पृथ्वी और पाताल तीनों पथों में प्रवाहित होती हैं, इसलिए इन्हें 'त्रिपथगा' और 'दिव्या' भी कहा गया है।[6] देवता, गंधर्व और ऋषियों द्वारा गंगा को राजा जन्हु की पुत्री माना गया, इसलिए गंगा को 'जान्हवी' नाम से भी जाना जाता है।[7]

रामायण में उल्लिखित है कि वनगमन के समय राम, लक्ष्मण और सीता ने राजा गुह के राज्य श्रृंगवेरपुर में गंगा तट पर ही इंगुदी वृक्ष के नीचे अपनी दूसरी रात बिताई थी।[8] प्रातः इसी स्थल से सुमन्त्र को अयोध्या वापस करने के पश्चात तीनों लोगों ने नाव द्वारा गंगा नदी पार कर आगे की यात्रा पैदल ही की थी। यहीं भागीरथी की बीच धारा में पहुंचकर सीता जी द्वारा मां गंगा की प्रार्थना करने का भी उल्लेख है।[9] राम के राज्याभिषेक हेतु गंगा–यमुना के पवित्र संगम से जल लाने का भी वर्णन है।[10] गंगा–यमुना संगम पर ही भरद्वाज ऋषि के आश्रम होने का भी उल्लेख है[11], जहां पर श्रीराम ने एक रात बिताई थी।[12] वर्णित है कि जिस स्थल पर गंगा से यमुना का मिलन होता है वहां पहुंचने के लिए श्रीराम को एक घने जंगल से होकर गुजरना पडा और नदियों के परस्पर मिलने के समय जल का भारी शोर होने के कारण ही इन्हें संगम होने का अनुमान लगा।[13] उल्लेख है कि गंगा नदी पश्चिमाभिमुख होकर यमुना नदी से मिली है।[14] गंगा नदी में हंसों के भी पाए जाने का वर्णन है।[15] रामायण में भरत के केकय प्रदेश से अयोध्या आते समय सरस्वती और गंगा की धारा के संगम का भी उल्लेख है।[16]

गंगा को 'अलकनन्दा', 'द्युधुनी' या 'द्युनदी' भी कहा जाता है। पतंजलि के महाभाष्य में भी गंगा का उल्लेख है। ब्रम्हाण्ड पुराण तथा कालिदास के रघुवंश में भी गंगा का उल्लेख

Received: 25.10.2020 **Accepted:** 16.11.2020 **Published**: 18.11.2020

This work is licensed and distributed under the terms of the Creative Commons Attribution 4.0 International License (https://creativecommons.org/licenses/by/4.0), which permits unrestricted use, distribution, and reproduction in any Medium, provided the original work is properly cited.

Journal of Advance Research in Science and Social Science (JARSSC)
Publisher: Indian Mental Health & Research Centre
ISSN: 2582-2004
Volume 03, Issue 02
DOI: 10.46523/jarssc.03.02.24
Multidisciplinary, Open Access
Impact Factor: 3.612

मिलता है।[17] पद्म पुराण में भी गंगा माहात्म्य का वर्णन है।[18] लुडविग के अनुसार अथर्ववेद में उल्लिखित वारणावती गंगा ही प्रतीत होती हैं।[19] महाभारत में भी गंगा का उल्लेख है।[20] ब्रम्ह पुराण ''अध्या.78, श्लोक.77'' के अनुसार विन्ध्य पर्वत के दक्षिण में प्रवाहित होने वाली गंगा को गौतमी गंगा और इसके उत्तर में प्रवाहित होने वाली गंगा को भागीरथी गंगा कहा जाता है।[21] यूनानी इतिहासकार मेगस्थनीज ने लिखा है कि गंगा और सिन्धु नदी में गंगा अधिक बडी है।[22]

आधुनिक भूगोलवेत्ताओं के अनुसार भागीरथी सर्वप्रथम गढवाल क्षेत्र में गंगोत्री के समीप दृष्टिगत होती हैं।[23] यहीं भागीरथी के दाहिने तट पर गंगोत्री मन्दिर है। कहा जाता है कि यह मन्दिर उसी स्थान पर है, जहां राजा भगीरथ ने तप किया था। इस स्थान को गंगोत्री कहते हैं क्योंकि गंगा यहां उत्तर की ओर बहती हैं। वर्तमान में गंगा का उद्गम यहां से 19 कि.मी. उपर गंगोत्री ग्लेशियर गोमुख ''उत्तरकाशी'' में है।[24] आगे चलकर देवप्रयाग में बाईं ओर से आकर भागीरथी में अलकनंदा मिल जाती हैं। देवप्रयाग से इस इस संयुक्त प्रवाह को ही 'गंगा' कहा जाता है। देहरादून से इसका प्रवाह वेगपूर्ण है, जिसे 'गंगाद्वार' भी कहा जाता है। हरिद्वार से बुलंदशहर तक गंगा का प्रवाह दक्षिणोन्मुखी और इसके बाद प्रयाग तक, जहां यमुना नदी आकर इसमें मिलती है, इसका प्रवाह दक्षिणपूर्वाभिमुखी है। प्रयागराज के आगे राजमहल तक यह पूर्व दिशा में और इसके बाद यह पुनः दक्षिणपूर्वोमुखी होकर प्रवाहित होती है।[25] माना जाता है कि प. बंगाल तक पहुंचते–पहुंचते इसकी कुल लम्बाई लगभग 2510 कि.मी. हो जाती है।

A. दिव्या–

रामायण में दिव्या नदी को गंगा का ही एक दूसरा रूप/नाम माना गया है। रामायण के अनुसार गंगा जी हिमवान और उनकी पत्नी मेना की ज्येष्ठ पुत्री हैं।[26] ये गिरिराज कुमारी गंगा रमणीया देवनदी के रूप में देवलोक में भी प्रवाहित हुई हैं[27] इसलिए ब्रम्हा जी के

Received: 25.10.2020 **Accepted:** 16.11.2020 **Published**: 18.11.2020

This work is licensed and distributed under the terms of the Creative Commons Attribution 4.0 International License (https://creativecommons.org/licenses/by/4.0), which permits unrestricted use, distribution, and reproduction in any Medium, provided the original work is properly cited.

Journal of Advance Research in Science and Social Science (JARSSC)
Publisher: Indian Mental Health & Research Centre
ISSN: 2582-2004
Volume 03, Issue 02
DOI: 10.46523/jarssc.03.02.24
Multidisciplinary, Open Access
Impact Factor: 3.612

कथनानुसार गंगा की 'दिव्या' नाम से भी प्रसिद्धि हुई[28] अर्थात गंगा का ही दूसरा नाम दिव्या है।

B. जाहन्वी–

रामायण में इसे भी गंगा का ही दूसरा नाम माना जाता है। रामायण के अनुसार भगीरथ के पीछे–पीछे आती हुई गंगा ने अपने जल प्रवाह से राजा जन्हु के यज्ञ मंडप को नष्ट कर दिया। इससे क्रोधित होकर जन्हु ने गंगा का सारा जल पी लिया। देवता, गन्धर्वों और ऋषियों द्वारा महात्मा जन्हु की प्रार्थना करने और गंगा को उनकी ही पुत्री मानने का संकल्प करने पर जन्हु ने कान द्वारा गंगा को पुनः प्रकट कर दिया। तभी से गंगा को जन्हु की पुत्री 'जाहन्वी' कहा जाता है।[29]

C. त्रिपथगा–

रामायण के अनुसार यह भी गंगा नदी का ही एक अन्य नाम है। इसमें वर्णित है कि गंगा तीन पथों– 'एक आकाश मार्ग में, दूसरी देवनदी के रूप में देवलोक में और तीसरी गंगा नाम से मृत्युलोक (पृथ्वी) में प्रवाहित होती हैं।' इस तरह तीनों लाकों में प्रवाहित होने के कारण ही यह संसार में 'त्रिपथगा' नाम से प्रसिद्ध हुई।[30]

D. भागीरथी–

रामायण में भागीरथी को भी गंगा का ही एक अन्य नाम माना गया है। इसमें उल्लेख मिलता है कि इक्ष्वाकु वंशी भगीरथ द्वारा पितामह ब्रम्हा और भगवान शिव की कठोर तपस्या के पश्चात दिए गए वरदान द्वारा गंगा का पृथ्वी पर अवतरण हुआ और गंगा को भगीरथ की ज्येष्ठ पुत्री माना गया इसलिए इनका प्रथम नाम भागीरथी पड़ा।[31] देवप्रयाग (उत्तराखण्ड)

Received: 25.10.2020 **Accepted:** 16.11.2020 **Published**: 18.11.2020

This work is licensed and distributed under the terms of the Creative Commons Attribution 4.0 International License (https://creativecommons.org/licenses/by/4.0), which permits unrestricted use, distribution, and reproduction in any Medium, provided the original work is properly cited.

Journal of Advance Research in Science and Social Science (JARSSC)
Publisher: Indian Mental Health & Research Centre
ISSN: 2582-2004
Volume 03, Issue 02
DOI: 10.46523/jarssc.03.02.24
Multidisciplinary, Open Access
Impact Factor: 3.612

में बाईं ओर से आकर इसमें अलकनन्दा नदी मिल गई, इन दोनों के संयुक्त प्रवाह को ही गंगा नाम से जाना गया।[32]

कुछ विद्वानों का मानना है कि गंगा एक नहर है जो राजा भगीरथ ने गंगोत्री (उत्तरकाशी, जि. उत्तराखण्ड) जैसे दुर्गम प्रदेश में अपने प्रयास से तैयार कराई। पहाड़ों के नीचे गंगा की नहर जैसी संरचना देखकर ही कई अभियंताओं ने यह मत प्रकट किया है (केदार सिंह फोनिया– उत्तराखण्ड द लैण्ड ऑफ जंगल्स, टेम्पुल्स एन्ड स्नेज)। गंगा गंगोत्री में उत्तर दिशा की ओर बहती है। इससे नीचे हरसिल त कवह उत्तर–पश्चिम की ओर बहती है। इसके बाद गंगा एकदम से दक्षिण की ओर राजा भगीरथ के देश की तरफ प्रवाहित होने लगती है। यदि हरसिल में गंगा का प्रवाह न बदला होता त बवह तिब्बत की ओर चली जाती। इस मत की पुष्टि यहां के ढालों की बनावट देखकर भी होती है। अधिकांश विद्वान गंगोत्री के आसपास की संरचना को देखकर यह मानते हैं कि हिम से ढके हिमालय से राजा भगीरथ, गंगा की धारा को मोड़कर भारत की ओर लाए थे।[33] सम्भव है कि तभी गंगा का प्रारम्भिक नाम भागीरथी पड़ा हो।

वर्तमान में यह एक विचारणीय प्रश्न है कि 'क्या राजा भगीरथ एक बड़े अभियन्ता थे'?

2. शोण–

वाल्मीकि रामायण में उल्लेख मिलता है कि मारीच आदि राक्षसों के वध के पश्चात जब राम, लक्ष्मण विश्वामित्र जी के साथ मिथिला जा रहे थे तब रास्ते में शोण/शोणभद्र के तट पर ही उन्होंने रात्रि विश्राम किया था।[34] आगे वर्णित है कि राजा वसु द्वारा पांच श्रेष्ठ पर्वतों (विपुल, वराह, वृषभ, ऋषिगिरि, चैत्यक– महाभारत, सभापर्व.21/1–10) के मध्य स्थापित और वसुमती नाम से प्रसिद्ध गिरिव्रज नाम की एक राजधानी थी।[35] वहीं इन्हीं पांच पर्वतों के मध्य एक माला की तरह सुशोभित होती हुई यह शोण नदी दक्षिण–पश्चिम दिशा से प्रवाहित होती हुई मगध देश में आई और यहां 'सुमागधी' नाम से प्रसिद्ध हुई।[36] रामायण

Received: 25.10.2020 **Accepted:** 16.11.2020 **Published**: 18.11.2020

This work is licensed and distributed under the terms of the Creative Commons Attribution 4.0 International License (https://creativecommons.org/licenses/by/4.0), which permits unrestricted use, distribution, and reproduction in any Medium, provided the original work is properly cited.

Journal of Advance Research in Science and Social Science (JARSSC)
Publisher: Indian Mental Health & Research Centre
ISSN: 2582-2004
Volume 03, Issue 02
DOI: 10.46523/jarssc.03.02.24
Multidisciplinary, Open Access
Impact Factor: 3.612

के अनुसार विश्वामित्र जी ने श्रीराम से बताया कि महात्मा वसु से सम्बन्ध रखती हुई यह नदी दक्षिण–पश्चिम से आकर पूर्वोत्तर दिशा की ओर प्रवाहित हुई है। इसके दोनों किनारे हरे–भरे,शस्य–श्यामल खेतों से सुशोभित हैं।[37] आगे वर्णित है कि अथाह जल से भरी हुई शोण नदी के जल की स्वच्छता और तटों की सुन्दरता से प्रभावित होते हुए श्रीराम ने विश्वामित्र जी से इसके पार करने का मार्ग पूछा, तब उन्होंने बताया कि हम शोण को उस मार्ग से पार करेंगे जिस मार्ग का अनुसरण महर्षि लोग करते हैं।[38] रामायण में उल्लेख है कि सुग्रीव द्वारा सीता जी की खोज में किष्किंधा से पूरब दिशा की ओर भेजे जाने वाले एक लाख वानरों की सेना के यूथपति विनत से सभी नदियों के साथ–साथ शोण नदी के तटों पर भी ढूंढने का आदेश था।[39] रामायण में समुद्र के उस पार (द्वीपान्तर) सिद्धों बौर चारणों के वास स्थल के समीप लाल जल से परिपूर्ण और शीघ्र प्रवाहित होने वाली एक अन्य शोण नदी का भी उल्लेख है, जिसके तटों पर अद्भुत वनों और सुरम्य तीर्थों के होने का भी वर्णन है।[40]

प्रसिद्व इतिहासकार बी.सी.लाहा के अनुसार–''शोण गंगा की सबसे बड़ी निचली सहायक नदी है। जिसे एरियन की सोनोस (sonos) तथा आधुनिक सोन से समीकृत किया जाता है। जो जबलपुर (म.प्र.)में मेकल पर्वत श्रेणी (मैकाल) से निकलकर उत्तर–पूर्व की ओर बघेलखण्ड, मिर्जापुर और शाहाबाद जिलों में बहती हुई पटना में गंगा में मिलती है। पांच सहायक नदियां सोन को आपूरित करती हैं।''[41] पद्म पुराण (उत्तर खण्ड, श्लोक 35–38) में इस बड़ी नदी का उल्लेख किया गया है। पुराणों में इसे ऋक्ष पर्वत माला से निकलने वाली महत्वपूर्ण नदियों में से एक बताया गया है। इस नदी को पार करके ही दधीचि अपने पिता की तपोभूमि में पहुंचे थे (हर्षचरित, प्रथम उच्छ्वास)। कालिदास ने अपने रघुवंश में इसका उल्लेख किया है।[42] महाभारत में वर्णित नदियों में भी शोण (गंगा की सहायक सोन नदी) का उल्लेख है।[43] ए.बी.एल. अवस्थी के अनुसार– ''शोण (सोन) पूर्व की प्रसिद्ध नदी

Received: 25.10.2020 **Accepted:** 16.11.2020 **Published**: 18.11.2020

This work is licensed and distributed under the terms of the Creative Commons Attribution 4.0 International License (https://creativecommons.org/licenses/by/4.0), which permits unrestricted use, distribution, and reproduction in any Medium, provided the original work is properly cited.

Journal of Advance Research in Science and Social Science (JARSSC)
Publisher: Indian Mental Health & Research Centre
ISSN: 2582-2004
Volume 03, Issue 02
DOI: 10.46523/jarssc.03.02.24
Multidisciplinary, Open Access
Impact Factor: 3.612

है।''[44] आधुनिक भूगोलवेत्ताओं के अनुसार सोन (स्वर्ण) अमरकंटक पहाड़ी (म.प्र.) के शोषाकुंड नामक स्थान से निकलकर पुर्व की ओर मध्य प्रदेश में बहने के बाद, उत्तर प्रदेश (सोनभद्र जि.) से होते हुए बिहार में पटना के समीप गंगा में मिल जाती है। इतिहासकार डॉ. दिनेश चन्द्र सरकार का भी मानना है कि– ''शोण आधुनिक सोन नदी है जो कि पुराणों में वर्णित ऋक्षवत् पर्वत से निकलकर (अमरकंटक श्रेणी) बिहार में पटना के निकट गंगा नदी में मिल जाती है।''[45] यूनानी लेखक एरियन ने अपनी पुस्तक इंडिका के दसवें अध्याय में पालिम्ब्रोथ (पाटलिपुत्र/पटना) को एरनबाओस (हिरण्यवाह/सोन नदी) तथा गंगा के संगम पर स्थित बताया है।[46]

उपर्युक्त विवरण से यह स्पष्ट होता है कि वाल्मीकि कृत रामायण में गंगा को विभिन्न रूपों और नामों से जाना गया है। स्पष्ट है कि महाकाव्य युग में भी गंगा का पवित्रतम् स्थान था। साथ ही शोण नदी भी विभिन्न स्थानों, में अपने विभिन्न नामों से प्रवाहित होते हुए अंततः स्वयं को गंगा में ही समाहित करके पवित्रतम् स्थान प्राप्त की।

सन्दर्भ

1. सत्यकेतु विद्याालंकार– वैदिक युग, पृ.
2. बाल./42/23, बाल./43/1–19
3. बाल./43/11–15
4. बाल./44/3
5. बाल./44/5
6. बाल./44/6
6. बाल./43/37,38
8. अयोध्या./50/28–34
9. अयोध्या./52/13, 74–93

Received: 25.10.2020 **Accepted:** 16.11.2020 **Published**: 18.11.2020

This work is licensed and distributed under the terms of the Creative Commons Attribution 4.0 International License (https://creativecommons.org/licenses/by/4.0), which permits unrestricted use, distribution, and reproduction in any Medium, provided the original work is properly cited.

Journal of Advance Research in Science and Social Science (JARSSC)
Publisher: Indian Mental Health & Research Centre
ISSN: 2582-2004
Volume 03, Issue 02
DOI: 10.46523/jarssc.03.02.24
Multidisciplinary, Open Access
Impact Factor: 3.612

10. अयोध्या. / 15 / 5
11. अयोध्या. / 54 / 8
12. अयोध्या. / 54 / 35
13. अयोध्या. / 54 / 2,6
14. अयोध्या. / 54 / 4
15. उत्तरकाण्ड / 18 / 30
16. अयोध्या. / 71 / 5
17. बी.सी.लाहा– उपर्युक्त, पृ. 131–132
18. पद्म पुराण ''सृष्टि खण्ड''– प. श्रीराम शर्मा, पृ. 403
19. बी.सी.लाहा– उपर्युक्त, पृ. 132
20. ए.बी.एल. अवस्थी– उपर्युक्त, पृ. 66
21. बी.सी.लाहा– उपर्युक्त, पृ. 132
22. बी.सी.लाहा– उपर्युक्त, पृ. 133
23. बी.सी.लाहा– उपर्युक्त, पृ. 53
24. शारदा त्रिवेदी– नगाधिराज हिमालय, पृ. 88
25. बी.सी.लाहा– उपर्युक्त, पृ. 53
26. बाल. / 35 / 16
27. बाल. / 35 / 24
28. बाल. / 44 / 6
29. बाल. / 43 / 33–38
30. बाल. / 23 / 5, बाल. / 35 / 12–24
31. बाल. / 41 / 14–25, बाल. / 42 / 1–3, बाल. / 43 / 5
32. बी.सी.लाहा– उपर्युक्त, पृ. 53
33. शारदा त्रिवेदी– नगाधिराज हिमालय, पृ. 93

Received: 25.10.2020 **Accepted:** 16.11.2020 **Published**: 18.11.2020

This work is licensed and distributed under the terms of the Creative Commons Attribution 4.0 International License (https://creativecommons.org/licenses/by/4.0), which permits unrestricted use, distribution, and reproduction in any Medium, provided the original work is properly cited.

Journal of Advance Research in Science and Social Science (JARSSC)
Publisher: Indian Mental Health & Research Centre
ISSN: 2582-2004
Volume 03, Issue 02
DOI: 10.46523/jarssc.03.02.24
Multidisciplinary, Open Access
Impact Factor: 3.612

34. बाल. / 31 / 20

35. बाल. / 32 / 7,8

36. बाल. / 32 / 9

37. बाल. / 32 / 10

38. बाल. / 35 / 4, 5

39. किष्किंधाकाण्ड / 40 / 16–21

40. किष्किंधा. / 40 / 33, 34

41. बी.सी.लाहा– उपर्युक्त, पृ. 54, 216

42. उपर्युक्त, पृ. 217

43. ए.बी.एल. अवस्थी– उपर्युक्त, पृ. 66

44. उपर्युक्त, पृ. 208

45. D.C. Sarkar– 'cosmography and geography in early Indian literature', p.85

46. डॉ. हेमचन्द्र राय चौधुरी– प्राचीन भारत का राजनैतिक इतिहास, पृ. 202

Received: 25.10.2020 **Accepted:** 16.11.2020 **Published**: 18.11.2020

This work is licensed and distributed under the terms of the Creative Commons Attribution 4.0 International License (https://creativecommons.org/licenses/by/4.0), which permits unrestricted use, distribution, and reproduction in any Medium, provided the original work is properly cited.